पिण्ड *m.* (r. पिण्ड् s. अ) 1) frustum. RAGH. 2.59. 2) libum, popanum, quod majoribus offertur. BR. 3.8. 3) corpus. RAGH. 2.57.

पितामह *m.* (e पिता pro पितृ - vel potius e पितर् abjecto र् et producto अ, v. gr. 179. - et मह v. gr. 681.) 1) avus paternus, *in Plur.* majores. BR. 3.6. 2) deus *Brahma* tanquam primitivus pater. SU. 1.17.18. 3.2.

पितृ *m.* (ut equidem puto, e पतृ, attenuato अ in इ, पतृ autem pro पातृ a r. पा servare, nutrire, suff. तृ) pater. SA. 5.93. — *Dual.* पितरौ parentes. SA. 5.99. — *Plur.* पितरस् majores, patres. BR. 3.8.19. (Zend. *patarĕ*, nom. *pata*, acc. *pathrĕm* pro *patarĕm*, v. gr. comp. p. 324.; gr. πατήρ; lat. *pater*; germ. vet. *fatar, fater*; goth. *fadrein* parentes; hib. *athair* pater pro *pathair.*)

पितृपैतामह *Adj.* (e पितृ pater et पैतामह avitus a पितामह suff. अ) paternus et avitus. BR. 2.14. SA. 7.7.

पितृराज *m.* (majorum rex, e पितृ et राज rex *in fine compp.*) nomen dei *Yami*. SA. 5.14.

पितृव्य *m.* (a पितृ s. व्य) patruus. AM. (Fortasse lat. *patruus*, ita ut suff. *uu* = व्य, ejecto य्, mutato *v* in *u*.)

पित्त *n.* bilis.

पित्र्य (a पितृ s. य) paternus. MAN. 10.59.

पित्स् (e पिपत्स्, ejectâ syllabâ प) *Desid.* radicis पत्.

पित्सत् *m.* (volare volens, part. praes. praec.; nom. पित्सन्) avis. AM. (Cf. *psittacus.*)

पिधान *n.* (r. धा praef. पि pro अपि s. अन) tegumentum. (Cambro-brit. *fedon* «a skreen».)

पिनद्ध v. नह्.

पिनाक *m. n.* 1) *Sivi* arcus. A. 3.5. 2) tridens. AM.

पिनाकिन् *m.* (a praec. s. इन्) nomen dei *Sivi*.

पिन्व् 1. *P.* (scribitur पिव्, gr. 110[a].) 1) effundere. RIGV. 64.6.: पिन्वन्त्य् अपो मरुतः; 34.4.: त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरे ’व (अक्षरा इव) पिन्वतम् «ter cibum nobis, aquarum instar, effundite (Asvini!)». 2) conspergere, irrigare. RIGV. 64.5.: भूमिम् पिन्वन्ति पयसा. 3) implere. RIGV. (v. Westerg.) पिन्वतम् अपितः (Schol. जलरहिता नदीः) पिन्वतन् धियः. *ATM.* impleri, turgere. RIGV. 8.7.: यः कुक्षिः ... समुद्र इव पिन्वते. (Fortasse पिन्व् reduplicatione ortum est e 1. पा bibere - cf. पिबामि - ita ut sensu caus. primitive significet bibere facere; cf. मिन्व्.)

पिपासा *f.* (a पिपास् *DESID.* rad. पा bibere suff. आ) bibendi desiderium, sitis. H. 1.4. SU. 1.8. (Fortasse gr. δίψα e βίψα pro πίψα.)

पिपासित (a praec. s. इत, v. gr. 652.) sitiens. SA. 5.36.

पिप्पलि, पिप्पली *f.* piper. (Gr. πίπερι, πέπερι; lat. *piper.*)

पिप्पलीमूल *n.* (e praec. et मूल) radix arboris piperis. AM.

पिप्लु *m.* (fortasse forma redupl., nisi e praep. पि et rad. प्लु) nota, macula, naevus. N. 17.5.

पिल् 10. *P.* (क्षेपे *K.* नुदि *V.*) jacere, conjicere, mittere.

पिव् v. 1. पा.

पिश् 6. *P.* पिंशामि, v. gr. 335. (अवयवे) *in dial. Vêd.* induere, vestire? RIGV. 68.5.: पिपेश नाकं स्तृभिः Ros. «decoravit coelum stellis»; *Vêd. apud Mâdh.* (v. Westerg.): नक्षत्रेभ्यः पितरो द्याम् अपिंशन्; त्वष्टा रूपाणि पिंशतु; RIGV. V.: वाचम् पिपिशुर् वदन्तः. (*Cf.* पश् ligare, unde पिश् ortum esse videtur attenuato अ in इ. Westerg. radicem पिश् explicat per formare, figurare, decorare. Fortasse huc pertinet lat. *fingo*, mutatâ tenui (श् = *k*) in mediam.)

c. आ *i. q. simpl.* RIGV. 5. (v. Westerg.): आ रोदसी पिशानाः.

c. निस् *id.* RIGV. 110.8.: निश् चर्मणा ऋभवो गाम् अपिंशत «Ribhues! cute vaccam induistis».

पिशाच *m.* *Pis'âcus*, nomen malorum daemonum. N. 12. 7.

पिशाची *f.* *Fem.* praecedentis.

पिशित *n.* caro. H. 2.10.

पिशितेप्सु *Adj.* (*TATP.* e praec. et ईप्सु q. v.) carnis cupidus. H. 2.3.

1. पिष् 7. *P.* *interdum A.* pinsere, terere, conterere. MAH. 4.632.: पिनष्म्य् अहञ् चन्दनम्; 4.261.: पिंषे